जॉन मीयरशीमर का नवयथार्थवादी स्थायित्व का सिद्धान्त

शीत युद्ध के अन्त ने यथार्थवाद सिद्धान्तों में भावी समय के संबंध में एक महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा कर दिया है। जॉन मीयरशीमर केनेथ वाल्ट्ज के नवयथार्थवादी तर्क को आगे बढ़ाते हैं, और इसे भूत एवं भविष्य, दोनों समय पर लागू करते हैं। उनके अनुसार, अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के स्पष्टीकरण के लिए नवयथार्थवाद की निरंतर प्रासंगिकता बनी रही है। उनका दावा है कि नवयथार्थवाद एक सामान्य सिद्धान्त है जो शीत युद्ध के अतिरिक्त अन्य ऐतिहासिक स्थितियों पर भी लागू होता है। मीयरशीमर आगे यह तर्क देते हैं कि नवयथार्थवाद का प्रयोग शीत युद्ध के पार अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों की दिशा के भविष्य निर्देशन के लिए भी किया जा सकता है।

द्विध्रुवीय एवं बहुध्रुवीय व्यवस्थाओं को सम्मिलित रूप से शक्ति का प्रमुख संरचनात्मक प्रबंध माना जाता है जो स्वतंत्र राज्यों में संभव हो सकती है।

इसके पीछे तीन प्रमुख कारण हैं,

प्रथम- बड़ी-बड़ी शक्तियों के बीच विवादों की संख्या कम है और यह किसी भी महाशक्ति द्वारा युद्ध की संभावना को कम कर देता है।

द्वितीय- भय द्वारा निवारण कर प्रभावी व्यवस्था का संचालन आसान है क्योंकि इसमें शामिल महाशक्तियों की संख्या कम है। अन्ततः चूँकि केवल दो ही महाशक्तियाँ व्यवस्था पर प्रभुत्व करेंगी, इसलिए मिथ्या अनुमान और किसी भी अस्पष्टता की संभावना कम हो जाएगी। यदि बड़ी संख्या में महाशक्तियाँ विद्यमान होंगी तो दो महाशक्तियां संयुक्त राज्य अमेरिका (U.S.A) एवं सोवियत रूस (USSR) विकर्षण एवं उलझन के बिना एक-दूसरे पर आँखे गड़ाए रख सकते हैं।

Scanned with CamScanner

मीयरशीमर इस बात की जाँच करते हैं कि किस प्रकार द्विध्रुवीय व्यवस्था से बहुध्रुवीय व्यवस्था में परिवर्तन होने पर कोई देश उत्तर-शीतयुद्ध कालीन यूरोप में शांति के अवसरों अथवा युद्ध के खतरों को प्रभावित कर सकता है। उनके मतानुसार, यूरोप में महान संकट एवं युद्ध के आयामों में महत्वपूर्ण रूप से वृद्धि की संभावना है। उनका तर्क है कि सैन्य शक्ति का वितरण एवं प्रकृति युद्ध एवं शांति के प्रमुख स्रोत हैं। बहुध्रुवीय विश्व अस्थिरता की ओर प्रवृत हो सकता है। यह विशाल परमाणु शस्त्रागार को भी समाप्त कर सकता है जिसे महाशक्तियों ने मध्य यूरोप में कायम किया हुआ है और यह यूरोपीय राजनीति में इन शस्त्रों के विरोधी प्रभाव को भी समाप्त कर देगा। जब द्विध्रुवीय विश्व का स्थान बहुध्रुवीय विश्व ले लेगा, तो बहुध्रुवीय यूरोप अराजकता, अस्थिरता, संकट एवं यहाँ तक कि युद्ध के पुराने अशुभ दिनों की ओर अवांछनीय रूप से लौट जाएगा। मीयरशीमर का विश्लेषण पूर्व यूगोस्लाविया एवं पूर्व सोवियत संघ में संघर्ष एवं युद्ध के प्रकोप की पुष्टि करता है।

Scanned with CamScanner